Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
D.B. College Jaynagar
Dept. of Psychology

Study Material
B.A. Part-1 (H)
Paper- Ist
Date:- 20-05-2020 & 21-05-2020

Thinking Process of concept

चिन्तन में संप्रत्यय की भूमिका (Role of concepts in thinking):- चिन्तन प्रक्रिया में सम्प्रत्यय (concept) का विशेष महत्व है। चिन्तन का एक महत्वपूर्ण पक्ष संप्रत्यय का विकास (formation) है। संप्रत्यय एक ऐसे प्रतीक को कहते हैं जिसमें वस्तुओं की समान्य विशेषताएं पायी जाती है। अतः सम्प्रत्यय का महत्व मात्र चिन्तन में ही नहीं होता वरण व्यक्ति के भाषा विकास में भी इसका काफी महत्व है।

मनोवैज्ञानिक संप्रत्यय (concept) को चिन्तन का प्रमुख साधन मानते हैं, क्योंकि संप्रत्यय समस्या समाधान में अर्थात चिन्तन में काफी मदद करता है। हल्स, इगेथ एवं डीज (Hulse, Egeth & Deese, 1980) के अनुसार:- "कुछ नियम द्वारा गुणों का आपस में मिलना ही संप्रत्यय कहलाता है" जबकी बैरोन (Baron, 1992) के के अनुसार "संप्रत्यय उन वस्तुओं, घटनाओं, अनुभूतियों या विचारों जो एक या अधिक अर्थ में एक दूसरे से समान होते है," के लिए एक मानसिक श्रेणी होती है।" इन परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि संप्रत्यय का निर्माण तभी हो सकता है जब वस्तु उसमें गुण हो तथा सभी गुण एक विशेष नियम द्वारा आपस में सम्बन्धित हो।

वस्तुतः संप्रत्यय एक सामान्यीकरण (Generalization) प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न उद्दीपकों में से किसी एक के उपस्थित होने पर भी अनुक्रियाएं होती रहती है। संप्रत्यय मूर्त या आ अमूर्त (Abstract)

Scanned with CamScanner

हो सकते हैं। जैसे गाय, भैंस बकरी आदि को हम जानवर कहते हैं, जबकि सम्मान एक अमूर्त प्रत्यय है जिसे हम महसूस कर सकते हैं।

चिन्तन प्रक्रिया में संप्रत्यय की भूमिका को हम इस प्रकार समझ सकते हैं- मान लिजिए हमारे सामने समस्या उत्पन्न हुई की हमारी कार चलते चलते बन्द हो गई। समस्या उत्पन्न होते ही व्यक्ति इसके समाधान हेतु चिन्तन (Thinking) करता है, जब व्यक्ति चिन्तन करता है तो सम्प्रत्ययों द्वारा ही समस्या को हल करने का प्रयास करता है जैसे-यदि वह सोचता है कि कहीं टायर तो नहीं पंचर हो गया तो उसके मस्तिष्क टायर से सम्बन्धित सम्बन्धित सम्प्रत्यय उभरता है। यदि वह सोचता है कि इंजन में खराबी तो नहीं आ गयी, तो उसके मस्तिष्क में इंजन का संप्रत्यय उभरता है, और वह उसी के आधार पर समस्या के समाधान की ओर अग्रसर होता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि निम्न पाँच ऐसे कारक है जिससे चिन्तन में संप्रत्यय का महत्व सिद्ध होता है।

(i) जॉनसन - लार्ड एवं वाट्सन (Johnson-Laird & Watson, 1977) के अनुसार बिना सम्प्रत्यय के माध्यम से प्रत्येक वस्तु या घटना अजीब या अनोखी होगी। उसके बारे में चिन्तन या सामान्यीकरण करना सम्भव नहीं होगा, जैसे यदि किताब (Book) हमारे सामने आये तो सम्प्रत्यय के अभाव में वह अनोखी प्रतीत होगी, क्योंकि वह उन सब वस्तुओं से असम्बन्धित होगी जिन्हें हम जानते हैं।

(ii) साकेल (Sakal, 1977) के अनुसार संप्रत्यय के माध्यम से व्यक्ति की स्मृति में एक तरह की मितव्ययिता (Economy) उत्पन्न होती है अर्थात व्यक्ति विभिन्न समान वस्तुओं को एक संप्रत्यय के रूप में संग्रह करता है।

(iii) ब्रुनर, गुडनाऊ एवं अस्टीन (Bruner, Goodnow & Austin, 1956) का मत है कि संप्रत्यय का एक विशेष फायदा यह है कि इसके चलते व्यक्ति को सतत सिखना (constant Learning) की आवश्यकता नहीं रह जाती है।

(IV) ब्रुनर, गुडनाऊ एवं अस्टीन के अनुसार संप्रत्यय से यह ज्ञात होता है कि किसी वस्तु के प्रति किस तरह से प्रतिक्रिया की जाय, जैसे 'आग' को देखकर हम दूर हट जाते हैं, क्योंकि आग के संप्रत्यय को हम जानते हैं।

(V) ब्रुनर, गुडनाऊ, गुडनाऊ एवं अस्टीन नें भी ज्ञात किया की संप्रत्ययों द्वारा वस्तुओं एवं घटनाओं को संबंधित करने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार संप्रत्यय चिन्तन के एक प्रमुख साधन (Tool) के रूप में कार्य करता है जिससे चिन्तन के स्वरूप में सफलता एवं विशिष्टता आती है।

End

Sunil Kr. Suman

Scanned with CamScanner